ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-5* June- 2021
Innovation The Research Concept

भारत में नगरीय समाज एक विश्लेषण

An Analysis of Urban Society in India

Paper Submission: 03/06/2021, Date of Acceptance: 15/06/2021, Date of Publication: 25/06/2021

जितेन्द्र कुमार अहिरवाल
अतिथि विद्वान – समाजशास्त्र,
समाजशास्त्र विभाग,
शास. महाविद्यालय सिलवानी,
रायसेन, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश

भारत में नगरीय समाज की अवधारणा कोई नवीन अवधारणा नहीं है भारत में नगरीय समाज की अवधारणा नगरों की उत्पत्ति तथा उसके विकास के इतिहास से जुड़ी हुई है। यदि हम भारतीय नगरो के सन्दर्भ में, अतीत में देखे तो विभिन्न प्राचीन ऐतिहासिक तथा धार्मिक नगरों का स्वरूप देखने को मिलता है प्राप्त इतिहास के आधार पर अध्ययन करें तो अति प्राचीन काल में सिन्धु सभ्यता से जुड़े हड़प्पा तथा मोहन जोदड़ों नामक नगरों का स्वरूप सामने आता है।

''नगरीय समाज का संबंध एक ओर संसार के सभी समाजों से है वहीं दूसरी ओर नई प्रौद्योगिकी बदलते हुये सामाजिक मूल्यों तथा सामाजिक संरचना में होने वाले परिवर्तनो के फलस्वरूप नगरीय समाज में व्यापक परिवर्तन हो रहे हैं।[1]

पुरानी संस्कृतियों सभ्यता का जो स्वरूप सामने आता है जहाँ उस समय का नगरीय समाज वास करता था उसके बाद के समय में देखे तो विभिन्न धार्मिक एवं राजधानी नगरों का जिक्र आता है जैसे अयोध्या, मथुरा, सोमनाथ, कन्नौज, दिल्ली, वैशाली, गयाजी आदि। इन सभी नगरों में उस समय की परिस्थितियों के अनुसार नगरीय समाज का स्वरूप देखने को मिलता है। वैसे भारत में अधिकांश नगरों का विकास तटीय स्थलो पर अर्थात् नदियों के तट पर हुआ है।

The concept of urban society in India is not a new concept, the concept of urban society in India is related to the history of the origin and development of cities. In the context of Indian cities, if we look in the past, then we get to see the form of various ancient historical and religious cities. is.

"Urban society is related to all the societies of the world on the one hand, while on the other hand, new technology, changing social values and changes taking place in the social structure are taking place in the urban society.

The form of civilization that comes to the fore, where the urban society of that time used to live, in later times, there is mention of various religious and capital cities like Ayodhya, Mathura, Somnath, Kannauj, Delhi, Vaishali, Gayaji etc. According to the circumstances of that time, the nature of urban society is seen in all these cities. By the way, most of the cities in India have developed on the coastal sites i.e. on the banks of rivers.

मुख्य शब्द : नगरीय, समाज, संस्कृति, प्रौद्योगिकी, परिवर्तन, सभ्यता, तटीय स्थल, भारत इत्यादि।

Urban, Society, Culture, Technology, Change, Civilization, Coastal Places, India etc.

प्रस्तावना

''नगर के विकास के इतिहास से पता चलता है कि कुछ नगर तो नियोजित ढंग से वसाये गये है लेकिन कुछ ग्रामीण समुदाय के आकार के बढ़ने से नगर का रूप धारण कर गये है।''[2]

आज भी स्पष्ट है कि नियोजित ढंग से वसाये जा रहे शहरी समुदायो के अतिरिक्त स्थान विशेष में निवास करने वाले सदस्यों के उच्च जीवन स्तर एवं विकसित संस्कृति, सभ्यता तथा बढ़ती हुई जनसंख्या को देख उसको उचित श्रेणी के शहर का दर्जा दिया जाता है।

नगरीय समुदाय का अर्थ

''नगरी शब्द नगर से बना है जिसका अर्थ नगरो से संबंधित है। वैसे शहर समुदाय को एक सूत्र में बांधना अत्यन्त कठिन है। यद्यपि हम नगरीय समुदाय को देखते है वहां के विचारों से पूर्ण अवगत है लेकिन उसे परिभाषित करना आसान नहीं है कुछ समाजशास्त्रियों ने नगरीय समुदाय को परिभाषित किया जिनमे कुछ निम्नलिखित है।

मैकावर के अनुसार

''ग्रामीण एवं नगरीय समुदाय के विषय में बताया है कि इन दोनों के मध्य कोई ऐसी सुस्पष्ट विभाजन देखा नहीं है जो यह निश्चित कर सके कि नगर का अमुक बिन्दु पर अंत होता है तथा देहात का अमुख बिन्दु पर प्रारंभ होता है।''[3]

भारतीय नगरीय समाज के मुख्य आधार

नगरो में व्यक्ति स्वार्थ की ओर ही अधिक ध्यान देता है। अतएव नगरों में सामाजिकता के स्थान पर व्यक्तिवादिता पायी जाती है। नगरीय जीवन व्यस्त ही इतना है कि दूसरों के सुख–दुःख में हिस्सा लेने का समय ही नहीं मिलता। परिवार के सदस्यों तक में व्यक्तिवाद की भावना विकसित होने लगती है।

नगरीय समाज का आकार बड़ा होता है, इस कारण नगरीय समाज में धर्म, भाषा, व्यवसाय और जीवन–स्तर के आधार पर अधिक विषमता भी पायी जाती है। नगरों में विभिन्न भाषाभाषी, धर्मों, सम्प्रदायों, विचारों, जातियों, वर्गों व प्रान्तों के व्यक्ति एक साथ रहकर कार्य करते है। उनकी वेशभूषा, जीवन–सतर और आदर्शों वाले समूह मिल जाते है। व्यक्ति इनमें से किसी भी समूह की सदस्यता प्राप्त करने के लिए पूरी तरह स्वतन्त्र होता है।

नगरीय समाज में सामाजिक गतिशीलता अपनी चरमसीमा पर होती है। नगरीय पर्यावरण व्यक्ति की पारिवारिक पृष्ठभूमि को महत्व न देकर उसकी एक–दूसरे की कार्यक्षमता, योग्यता तथा व्यवहारकुशलता को महत्व दिया जाता है। इस स्थिति में एक व्यक्ति अपने जीवनकाल में ही अपने सामाजिक पद को ऊँचा उठा सकता है अथवा पहले की अपेक्षा उसकी स्थिति निम्न भी हो सकती है। यह परिस्थिति व्यक्ति के सामाजिक जीवन को अत्यधिक सुरक्षित अथवा असुरक्षित बना देती है।

नगरीय समाज में कानून जैसे औपचारिक साधनों व द्वितीयक समूहों द्वारा नियंत्रण स्थापित किया जाता है। इस प्रकार के नियंत्रण से सुव्यवस्था कम ही मात्रा में स्थापित हो सकती है। नियन्त्रण के अनौपचारिक साधनों का महत्व समाप्त हो जाता है, जिससे नगरो के नियंत्रण में शिथिलता पायी जाती है।

नगरीय समाज में लोगों के सम्बन्धों में घनिष्ठता नही होती तथा उनमे प्रायः अप्रयत्क्ष सम्बन्ध पाये जाते है। इसका प्रमुख कारण नगरों की अत्यधिक जनसंख्या है। वास्तव में जनसंख्या ही अतनी अधिक होती है कि सभी में प्रत्यक्ष सम्बन्ध स्थापित हो ही नहीं सकते है।

नगरीय समाज के लोगों में रीति–रिवाजों, रहन–सहन, खानपान की विषमता पायी जाती है, किन्तु फिर भी लोग ऐसा जीवन बनाये रखते है कि वे एक–दूसरे की बातों को सहन करते है। इससे सहिष्णुता को प्रोत्साहन मिलता है।

नगरीय समुदाय के लोगों के रहन–सहन और रीति–रिवाजों में समरूपता नहीं पायी जाती है। नगरो में विभिन्न रीति–रिवाजों, विचारों, व्यवसायों तथा संस्कृतियों के लोग एकत्रित होते है, जिससे उनमें विषमता आती है। अतः नगरीय समुदाय विजातीय वाले समुदाय होते है।

नगरीय समाज में श्रम–विभाजन और विशेषीकरण के कारण प्रत्येक कार्य का स्थान पूर्णतया नियत होता है। इसके आधार पर समाजशास्त्र में 'क्षेत्रीय सम्प्रदाय' तक की धारणा विकसित हो गयी है। नगर के बिल्कुल मध्य भाग में वे कार्यालय होते है, जो सार्वजनिक जीवन के लिए उपयोगी है। इनके चारों ओर प्रमुख व्यापारिक संस्थान, होटल, रेस्टारेण्ट तथा मनोरंजन के साधन उपलब्ध होते है। नगर के अन्दर घनी बस्ती वाले क्षेत्र होते है, जिनमें श्रमिक और कम आय वर्ग वाले निवास करते है। सबसे बाहर के क्षेत्र में धनी और प्रतिष्ठित वर्ग के निवास स्थान तथा विलासी संस्थान होते है। इस प्रकार नगरीय समाज प्रत्येक क्षेत्र में विशेषीकृत होते है।

नगरीय समाज की एक विशेषत शिक्षित और विवेकशील जीवन का होना है। राजनीतिक जीवन का केन्द्र होने के कारण नगरों में शिक्षा की सुविधाएँ सबसे अधिक होती है और सामाजिक जागरूकता होने के कारण व्यक्ति शिक्षा को सबसे अधिक आवश्यक भी मानते है। अन्धविश्वासों और रूढ़ियों का प्रभाव नगर में न्यूनतम होता है। शिक्षा के प्रभाव से कोई भी व्यक्ति ऐसे तथ्य में विश्वास नहीं करता, जिसे तर्क के द्वारा प्रमाणित न किया जा सकता हो। परम्पराओं के प्रति उदासीनता और नवीनता के प्रति प्रेम नगरीय समाज की स्थायी विशेषता है।

नगरीकरण एक व्यापक एवं निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है। नगरीकरण एक ऐसी प्रवृत्ति एवं प्रक्रिया है कि जो दिन–प्रतिदिन केवल बढ़ रही है। नगरीकरण की इस व्यापक एवं निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया के फलस्वरूप भारतीय नगरीय स्वरूप में भी निरन्तर एवं व्यापक परिवर्तन आता दिखाई देता है।''[4]

भारतीय समाज में परिवर्तन

भारतीय नगरीय सामज में होने वाले परिवर्तनों को निम्नानुसार स्पष्ट किया जा सकता है।

समस्याओं में वृद्धि होना

नगरीकरण की प्रक्रिया में जहाँ विकास एवं समृद्धि के दर्शन होते है, वहीं विभिन्न समस्याओं का जन्म भी होता है। अधिक भीड़भाड़ भरे वातावरण से घुटन–सी होती है। विभिन्न अपराधों का उदय होना भी नगरीकरण की प्रक्रिया जैसे अपराध अपना सर उठाने लगते है। ये सारी बातें न केवल नगरीकरण की समस्याएँ है, अपितु उसका एक आयाम, उसकी एक पहचान बन गए हैं।

बसावट एवं पुनर्वास व्यवस्था सम्बन्धी परिवर्तन

औद्योगीकरण की प्रारम्भिक अवस्था में, जब ग्रामीण क्षेत्रो से रोजगार के लिए लोगों का नगरों की ओर प्रवास हुआ, तो उस समय नगरों मे मानवीय बसाहट

अनियोजित ढंग से हो गई। बिजली, पानी, हवा, रोशनी के समुचित अभाव में तथा घर बनाने की जरूरत तथा अनिवार्यता को देखते हुए जहाँ–कहीं भी जगह मिली, नदी–नालों के किनारे, तंग–सँकरे स्थानों पर बस्तियाँ बसाकर लोग रहने लगे, जिससे झुग्गी–झोपड़ियों तथा गन्दी बस्तियों का हुजूम शहरों या नगरों के इर्द–गिर्द जमा हो गया, जहाँ मानव–समूह, कीड़े–मकोड़े की तरह दूषित एवं प्रदूषणयुक्त वातावरण में रहते हैं तथा स्वच्छ हवा, रोशनी तथा स्वच्छ जल आदि से वंचित रहते हैं। यह परिस्थितियाँ न केवल बीमारियों को अपितु महामारियों को भी खुला आमंत्रण देती नजर आती है।

उक्त परिस्थितियों से उभारने के लिए जो आयाम सामने आया है उसे बसाहट एवं पुनर्वास सम्बन्धी आयाम कहा जाता है। जिसमें इन मानव बस्तियों की हालत सुधारने तथा लोगों को नाले आदि के पास से हटाकर उनके यथोचित पुनर्वास की व्यवस्था की जाती है। इसके लिए सरकार द्वारा विभिन्न आवास योजनाओं के तहत् लोगों को निम्नतम दर पर आवास उपलब्ध कराये जाते है तथा बैकों के माध्यम से आवास हेतु सुलभ ऋण योजनाओं का संचालन किया जाता है। वर्तमान परिवेश में नगरीकरण का यह आयाम भी अपना प्रमुख स्थान बनाता जा रहा है।

सौन्दर्यीकरण

नगरीकरण के विभिन्न समाजशास्त्रीय परिवर्तनों में वर्तमान में एक नया आयाम जुड़ता जा रहा है। इसके तहत् नगर के सौन्दर्यीकरण की अवधारणा ने जन्म लिया है, जिसमें नगर के प्रमुख चौराहों तथा मार्गों को पेड़–पौधों तथा फव्वारों आदि के द्वारा आकर्षक एवं सौन्दर्यवर्धक बनाया जाता है। चौराहों पर सुन्दर मूर्तियाँ प्रतिस्थापित की जाती हैं। इन स्थानों का रंगबिरंगे फूल–पौधों तथा जंजारों आदि से सीमांकन भी किया जाता है। सौंदर्यीकरण का यह आयाम वर्तमान में गति पकड़ता जा रहा है।

विकास एवं नियोजन हेतु मास्टर प्लान

नगरीकरण की प्रक्रिया एक गतिशील प्रक्रिया है, जिसमें नगरों का निरन्तर विकास होता रहता है। उसमें उपनगर, नगर में तथा नगर महानगर निर्माण की दिशा में बढ़ते रहते है, जिससे नगरों का निरन्तर विस्तार होता रहता है तथा वे विशाल आकार ग्रहण करते जाते है। यह वृद्धि जनसंख्या के बढ़ने आवास–स्थलों के बढ़ने उद्योग–व्यवसाय केन्द्रों के बढ़ने तथा इनके लिए आवश्यक बुनियादी सुविधा–साधनों दिशा क्या हो–इन सबके लिए बुनियादी आवश्यकताओं की पूर्ति कैसे हो–इसके लिए सुनियोजित योजना की आवश्यकता होती है। इसे मास्टर प्लान कहा जाता है। इसके तहत् शासन–प्रशासन के सम्बद्ध विभाग तथा स्थानीय शासन इस बात का होमवर्क करते हैं कि सम्बद्ध नगर की वर्तमान जनसंख्या के सन्दर्भ में बुनियादी आवश्यकताओं तथा साधनों की क्या स्थिति है तथा आगामी समय में क्या स्थिति बनेगी तथा उसके लिए कितनी तथा किस रूप में शैक्षणिक, चिकित्सा, जल–पेयजल, सड़क, आवास एवं अन्य बुनियादी जरूरतों की आवश्यकता होगी। इसके अनुसार योजनाबद्ध तरीके से प्लान बनाया जाता है। वर्तमान में नगरीकरण की प्रक्रिया की तीव्र होती गति में यह आयाम अनिवार्य हो गया है।

शैक्षणिक आयाम सम्बन्धी परिवर्तन

नगरीकरण की प्रक्रिया के विभिन्न आयामों में से एक आयाम शैक्षणिक आयाम भी इसका प्रमुख आयाम बन गया है। सही रूप में देखें तो नगरीकरण की प्रक्रिया ने शैक्षणिक आयाम को विकसित किया है। वर्तमान व्यवस्था में नगर शिक्षा संस्थानों, विशेषकर उच्च शिक्षा, तकनीकी एवं अन्य विभिन्न व्यावसायिक शिक्षाओं जैसे–एम.बी.ए., एम.सी.ए., मेडिकल, इंजीनियरिंग, प्रौद्योगिकीय तथा अन्य शिक्षण–प्रशिक्षण केन्द्रों के गढ़ बनते जा रहे है। नगरीकरण के इसी आयाम के कारण ग्रामों की अपेक्षा नगरों का शैक्षणिक स्तर तथा प्रतिशत काफी उच्च देखा जा सकता है। नगरीकरण का शैक्षणिक आयाम भी उस नगर की उच्चता और प्रसिद्धि का दर्जा दिलवाता है।

औद्योगिक एवं व्यावसायिक परिवर्तन

औद्योगीकरण ने जड़ शक्ति अर्थात् मशीनों द्वारा उत्पादन करके मानव शक्ति एवं श्रम में बचत के साथ ही वस्तुओं का अतिशय उत्पादन किया है। उपभोक्ता–वस्तुओं का उत्पादन, वितरण की व्यवस्था तथा उनके उपयोग हेतु 'औद्योगीकरण तथा व्यवसायीकरण' नगरीकरण का तीसरा महत्वपूर्ण आयाम है। नगर, व्यवसाय एवं उद्योग के प्रमुख केन्द्र होते है। कई नगर तो मात्र उनके व्यवसाय एवं उद्योगों के कारण ही विकसित होते है तथा उन्हीं के कारण ही जाने भी जाते है। जैसे मध्यप्रदेश की टाटा स्टील के कारण जाना जाने वाला जमशेदपुर आदि। गाँवों से प्राप्त कच्चे माल से नगर द्वैतियक उत्पादन करते है तथा वहीं से व्यवसाय के माध्यम से उपभोक्ताओं तक पहुँचाते है। नगरीकरण की प्रक्रिया के इस आयाम में विभिन्न व्यवसायों तथा उद्योग–धंधों की उन्नति होती है। नये–नये कारखाने स्थापित होते है, जिसके फलस्वरुप रोजगार में वृद्धि होती है। रोजगार की ओर आकर्षित हो, ग्रामीण लोगो का नगर की ओर आजीविका हेतु आकर्षण बढ़ता है, फलस्वरुप नगरीकरण की प्रक्रिया तीव्र होती है। इस प्रकार उद्योग एवं व्यवसाय भी नगरीकरण की प्रक्रिया के प्रमुख सहायक है।

मनोरंजनात्मक आयाम

तेजी से बढ़ने वाले नगरों में घनी जनसंख्या के लिये मनोरंजन के पर्याप्त साधन होते है। नगर में रहने वाले लोगो के लिए महत्वपूर्ण मनोरंजन स्थल, यथा–पिकनिक स्पाट, गार्डन, क्लब, थियेटर या मल्टीथियेटर विकसित हुए है। पर्यटन विभाग द्वारा आमोद–प्रमोद के विभिन्न पर्यटन या पिकनिक स्थलों का निर्माण/विकास किया जाता है। नगरीय आबादी अपने अवकाश के क्षणों में अपने आमोद–प्रमोद के लिए इन स्थानों या साधनों का उपयोग करती है। इस प्रकार नगरीकरण की प्रक्रिया में मनोरंजनात्मक आयाम भी विकसित होता है।

जनसंख्यात्मक परिवर्तन

नगरीकरण की तीव्र गति से बढ़ती प्रक्रिया के फलस्वरूप नगरों में जनसंख्या का बढ़ता घनत्व, नगर की भीड़भाड़, घनी तथा कहीं–कहीं तो अनियोजित बसाहट के रुप को नगरीकरण का जनसंख्यात्मक आयाम कहा जा

सकता है। नगरों का विभिन्न श्रेणियों में वर्गीकरण जो कि नगरीकरण के चार्टर में प्रस्तावित होता है, वह जनसंख्यात्मक परिप्रेक्ष्य में ही होता है।

कोई एक भौगोलिक क्षेत्र गाँव है या कस्बा है, या फिर नगर अथवा महानगर, इसका निर्धारण उस स्थान विशेष की रहने वाली जनसंख्या की गणना पर आधारित होता है। जैसे–5,000 से कम जनसंख्या वाले गाँव, 5 से 50 हजार तक की जनसंख्या वाले कस्बे, नगर या शहर। इसी तरह 1 लाख तक की जनसंख्या वाले शहर, 5 लाख से 10 लाख तक की जनसंख्या वाले बड़े नगर तथा 25 लाख से अधिक जनसंख्या वाले महानगर। अतः स्पष्ट है कि सभी विकसित स्थान नगर नहीं होते है जब तक कि वह निर्धारित जनसंख्या का प्रतिनिधत्व न करें।

सामाजिक–आर्थिक परिवर्तन

गाँव प्राथमिक समूह होते है, जबकि नगर के विकास में द्वैतियक समूह की प्रधानता होती है। हालाँकि इसका अर्थ यह नहीं है कि नगरों में सामाजिकता का अभाव पाया जाता है, किन्तु यहाँ अपेक्षाकृत सामाजिक सम्बन्धों की निवैयक्तिकता पायी जाती है। यहाँ सामाजिक सम्बन्धों को आर्थिक या व्यावसायिक सम्बन्धों के आधार पर अधिक देखा जाता है। इसका कारण यह है कि नगर में लोग एक–दूसरे से व्यक्तियों के समान नहीं, बल्कि वस्तुओं के समान व्यवहार करते है। नगरों में आर्थिक व्यवहार वस्तुओं के लेन–देन पर आधारित न होकर मुद्रा के आधार पर होते है। यहाँ तक कि मानव–सम्बन्धों का मूल्यांकन भी रुपए–पैसे के आधार पर किया जाता है। परिवार, जाति–बिरादरी तथा समाज का नियंत्रण बहुत कम होता है।

इसका अर्थ यह नहीं कि सामाजिक सम्बन्ध बिल्कुल ही नहीं होते। नगरीय लोग आर्थिक क्रियाओं में ही संलग्न नहीं होते, बल्कि आर्थिक क्रियाओं को सम्पन्न करने तथा विकास की दर बढ़ाने हेतु सामाजिक सम्पर्क को बनाते तथा बढ़ाते है। इसे यों भी कहा जा सकता है कि वे आर्थिक या व्यावसायिक आधार पर ही सम्बन्ध बनने को ज्यादा महत्व देते है। शारीरिक तथा मानसिक श्रम से पूँजी उत्पादन में सामाजिक सम्पर्क महत्वपूर्ण होता है। इसके साथ ही, आर्थिक हितों के हनन के विरुद्ध संघर्ष के लिए सामाजिक संगठनों का निर्माण सामाजिक सम्पर्क द्वारा किया जाता है। नगरीकरण की प्रक्रिया में बढ़ती आर्थिक समस्याओं के समाधान हेतु प्रयास सामाजिक–आर्थिक सम्बंधों के आयाम को जन्म देते है।

यातायात एवं संचार सम्बन्धी परिवर्तन

जैसे–जैसे किसी क्षेत्र या स्थान का नगरीकरण की प्रक्रिया में विकास होता है, उस क्षेत्र या नगर में यातायात, परिवहन तथा संचार सुविधाओं को बढ़ाया जाता है। इसके अन्तर्गत बसों, रेलवे, हवाई सुविधाओं तथा फोन, मोबाईल तथा वर्तमान में बढ़ती इन्टरनेट सुविधाओं को लिया जा सकता है। वर्तमान में किसी नगर का विकास वहाँ मोजूदा यातायात तथा संचार के साधनों पर भी बहुत कुछ निर्भर हो गया है। यही कारण है कि नगरीकरण की प्रक्रिया का यह आयाम सम्बद्ध नगर के श्रेणीयन का प्रमुख आधार बन चुका है।

अध्ययन के उद्देश्य

वर्तमान सन्दर्भ में देखे तो औद्योगीकरण तथा व्यवसायीकरण के बढ़ते प्रभावो ने नगरीकरण को प्रोत्साहित किया है नगर परिवर्तनशील संस्कृति एवं सभ्यता के प्रतीक कहे जा सकते है तो नगरीय समाज की अपनी विशेषताएँ जैसे की व्यक्तिवादिता, जनसंख्या में विभिन्नता सामाजिक गतिशीलता, नियन्त्रण में शिथिलता, अप्रत्यक्ष संबंध, सहिष्णुता, विषमता स्थानीय पृथककरण शिक्षित और तर्क प्रधान जीवन और भारतीय नगरीय समाज में परिवर्तन इत्यादि।

नगरीकरण एक व्यापक एवं निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है। नगरीकरण एक ऐसी प्रवृत्ति एवं प्रक्रिया है कि जो दिन प्रतिदिन न केवल बढ़ रही अपितु तीव्र गति से बढ़ रही है। नगरीकरण की इस व्यापक एवं निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया के फलस्वरुप भारतीय नगरीय स्वरुप में निरन्तर एवं व्यापक परिवर्तन आया दिखाई देता है। उन सभी परिवर्तनों का उल्लेख करना मेरे शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य है।

निष्कर्ष

नगरीय जीवन एक गतिशील एवं विकास की ओर दौड़ता जीवन कहा जा सकता है बढ़ते नगरीकरण के कारण नगरीय समाज में परिवर्तन आता जा रहा है जिसके प्रमुख भाग–जनसंख्या वृद्धि, कृषि के क्षेत्र में क्रान्ति, औद्योगीकरण, शिक्षा का विकास, यातायात के साधनों में वृद्धि, व्यापारिक क्षेत्र में उन्नति, सुरक्षा की समस्या, नगरो का आकर्षण, राजनीतिक परिस्थितियाँ, भौगोलिक परिस्थितिया इत्यादि मुख्य है।[5]

नगरीकरण नगरों की संख्या में वृद्धि करने की एक प्रक्रिया है जिसके फलस्वरूप एक स्थान पर विविध संस्कृतियों के व्यक्ति एकत्रित होते है और विभिन्न प्रकार के अप्रत्यक्ष संबंधो से एक–दूसरे से संबंधित होते है। नगरीकरण की यह प्रक्रिया आधुनिक युग में तीव्र गति से विकसित हो रही है। इस प्रक्रिया के परिणामस्वरूप भारत के नगरीय समाज एवं नगरीय जीवन का रूप परिवर्तित हो रहा है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *स्किल प्रपेसन, पृ. 1*
2. *वहीं, पृ. 2*
3. *वहीं, पृ. 1*
4. *समाजशास्त्र, डॉ. एल. एस. गजपाल डॉ. ए.पी. श्रीवास्तव, रामप्रसाद एण्ड संस बाल बिहार, हमीदिया रोड, भोपाल–1, ISBN : 9789385589 05-8, संस्करण 2013, पृ. 4,*
5. *भारत में नगरीय समाज, रीया खत्री, कैलाश पुस्तक सदन हमीदिया रोड मार्ग भोपाल–462001, ISBN 978-93-82836-55-1, संस्करण 2015, पृ. 8*
6. *भारत में ग्रामीण समाज, डॉ. अमित अग्रवाल, विवेक प्रकाशन 7, यू. ए. जवाहर नगर दिल्ली–7, ISBN 81-7004-258-5, संस्करण 2016*